

किण्व पुं. (तत्.) 1. दुर्गुण 2. उफान या उबाल आना।

किण्वन पुं. (तत्.) दे. किण्व।

किण्वभोज पुं. (तत्.) जिसपर उबाल आए, ऐसा पदार्थ।

किण्वित वि. (तत्.) उबाल लाया गया वस्तु, पदार्थ।

कित क्रि.वि. (तद्.) किस दिशा में, किस ओर, कहाँ, वि. कितनी मात्रा, कितना।

कितउ क्रि.वि. (देश.) कहीं या कहीं भी।

कितक क्रि.वि. (तद्.) कितना, कहाँ वि. कई।

कितन क्रि.वि. (देश.) कितना।

कितना वि. (देश.) कितनी मात्रा का।

कितव पुं. (तत्.) 1. द्यूत (जुआ) खेलने वाला 2. धूर्त, शठ, छली 3. पागल 4. धतूरे का फल वि. कपटी, छली।

किता पुं. (अर.) 1. भूमिखंड। काव्य. उर्दू और फारसी कविता का एक भेद जिसकी तुलना गजल से की जाती है।

किताब स्त्री. (अर.) 1. ग्रंथ, पुस्तक 2. व्यापारियों का बही खात मुहा. किताब का कीड़ा- वह व्यक्ति जो हर समय किताब पढ़ने में लगा रहता है; किताब चाटना- पूरी किताब अच्छी तरह पढ़ लेना।

किताबत पुं. (अर.) लिखने का काम।

किताबी वि. (अर.) 1. पुस्तक से संबंधित 2. पुस्तक लिखित 3. जो केवल पुस्तक में हो व्यवहार में दिखाई न दे।

किताबी कीड़ा पुं. (अर.+तत्.) 1. किताब में लगने वाली दीमक 2. हमेशा पढ़ते रहने वाला व्यक्ति।

किताबी ज्ञान पुं. (अर.+तत्.) केवल पुस्तक से संबंधित ज्ञान।

कितिक वि. (देश.) कितने परिमाण का क्रि.वि. अधिम मात्रा।

किते/कितेक वि. (देश.) कितना, अनेक।

कितेब वि. (तद्.) कपटी, धूर्त।

कितै क्रि.वि. (देश.) किस स्थान पर, कहाँ।

कितौ क्रि.वि. (देश.) कितना।

किधर क्रि.वि. (देश.) किस तरफ, किस दिशा में।

किधौं अव्य. (देश.) या तो, अथवा संभवतः।

किन पुं. (देश.) कठोर वस्तु की रगड़ से त्वचा पर पड़ा निशान।

किनका पुं. (देश.) अनाज का टूटा कण या दाना।

किनकिना क्रि.अ. (देश.) धीरे-धीरे रोना।

किनकी स्त्री. (तद्.) अनाज की छोटी कणिका।

किनना क्रि.स. (तद्.) क्रय करना, खरीदना, मोलभाव करना।

किनर-मिनर स्त्री. (देश.) 1. निन्दाभाव 2. नाक भौ सिकोड़ने की क्रिया।

किनवानी स्त्री. (देश.) पानी के बूंदों की फुहार।

किनहा वि. (देशज.) सड़ा हुआ, कीड़ा लगा हुआ।

किनाठी स्त्री. (देश.) मिट्टी के बर्तन के मुँह का किनारा या कोर।

किनाती स्त्री. (देश.) एक पक्षी जो तालाब के किनारे रहता है और उसका रंग सफेद तथा चोंच हरी होती है।

किनाना वि. (देश.) 1. क्रय किया गया, खरीदा गया 2. वश में किया हुआ।

किनार स्त्री. (देश.) किनारा।

किनारदार वि. (देश.) किनारे वाला।

किनारा पुं. (फा.) 1. छोर 2. विस्तार का अंतिम हिस्सा मुहा. किनारा खींचना- दूर हो जाना या अलग हो जाना; किनारा मिलना- प्रतिबंध रहित हो जाना या बंधनमुक्त हो जाना; किनारे लगाना- संकटमुक्त हो जाना; किनारे पहुँचना- कार्य का अंत कर देना।

किनाराकशी स्त्री. (फा.) अलग हो जाना।